

---

# Shri Krishna Artikyam

---

## श्रीकृष्णार्तिक्यम्

---

### Document Information



---

Text title : Shri Krishna Artikyam

File name : kRRiShNArtikyam.itx

Category : vishhnu, vishnu, moropanta, krishna, AratI

Location : doc\_vishhnu

Author : Mayurakavi or Moropanta

Proofread by : Rajesh Thyagarajan

Description/comments : Stotras composed by Moropanta mayUrakavi

Latest update : December 23, 2023

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 23, 2023

*sanskritdocuments.org*

---



श्रीकृष्णार्तिक्यम्



मुचुकुन्देन यवनमिव दह गुरुणा मोहं  
स्पर्शमणिर्न सुवर्णं कुरुते किमु लोहं  
पतितोऽजामिल इव गजपतिरिव विकलोऽहं  
प्रभुरसि वेत्सि च दातुं वरसुखसन्दोहं  
जय भगवन् चक्रगदाशङ्खाम्बुजपाणे  
कुरु मयि दृष्टिं सकृपामसति(१) यथा वाणे । ध्रुव० ॥ १ ॥

अघमिव मामपि दुरितात्कुरुषे यदि मुक्तं  
भवतो (२)नवतोयदमदहरकान्ते युक्तं  
पालय न मे प्रणश्यति भक्त इति यदुक्तं  
स्मर तस्कलुषणगभिदुर विदुरगृहे भुक्तम् । जय भगवन् ॥ २ ॥

मायामूढेऽत्र जने दृष्ट्वालं दोषं  
मातुर्न मनस्तोके दृष्टं कृतरुषं  
ब्रह्मण्योऽसि विधेहि त्वं ब्राह्मणपोषं  
वितर मयूरे भक्ते करुणाघन तोषम् । जय भगवन् ॥ ३ ॥

इति श्रीरामनन्दनमयूरेश्वरकृतं श्रीकृष्णार्तिक्यं सम्पूर्णम् ।  
१। दुर्जने राक्षसे इत्यर्थः ।  
२। नवस्य तोयदस्य मदं हरतीति तादृशी कान्तिर्यस्य तत्सम्बुद्धौ ।

Proofread by Rajesh Thyagarajan

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

